Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

किरातार्जुनीयम् में द्रौपदी के उपदेशों का राजनीतिक महत्त्व

डॉ० सुजीत कुमार
असि० प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
इटावा,उत्तर प्रदेश,भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 3
Page Number : 20-24
Publication Issue :
May-June-2021
Article History
Accepted : 01 June 2021
Published : 15 June 2021

सारांश– द्रौपदी एक साधारण नारी होने के साथ–साथ नीति कुशल स्वाभिमानी क्षत्राणी है, जिसका भारतीय इतिहास की तेजस्वी नारियों में प्रमुख स्थान है । वह क्षमाशीलता को कायरता समझती है। द्रौपदी का शत्रु के प्रति युधिष्ठिर के सम्बोधन में जो तीक्ष्णता है, उसका कारण उसकी मनोदशा ही है। द्रौपदी का कथन व्यावहारिक एवं नीतिकुशल है, जो वर्तमान सन्दर्भ में एक समाज एवं राष्ट्र के वैभव में सहयोग प्रदान कर सकता है।

मुख्यशब्द – किरातार्जुनीयम्, संस्कृत, महाकाव्य, भारवि, राजनीतिक, द्रौपदी, सर्ग, सूक्ति।

संस्कृत काव्यों की वृहत्त्रयी परम्परा में सुप्रसिद्ध किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के रचयिता महाकवि भारवि हैं। यह महाभारत के वन पर्व के कुछ अध्यायों पर आश्रित है। इस महाकाव्य में अट्ठारह सर्ग हैं, जिसमें भारवि ने विचित्र मार्ग का प्रवर्तन करते हुए भावपक्ष की अपेक्षा कला पक्ष पर अधिक बल दिया है। भारवि ने इस ग्रन्थ में राजनीति परक जितनी सूक्तियाँ पात्रों के माध्यम से कहवायी हैं, वह यह सिद्ध करता है कि भारवि राजनीति के विशेष ज्ञाता भी थे। अट्ठारह अध्यायों वाली गीता में जिन राजनीतिक उपदेशों को भगवान् श्रीकृष्ण, अर्जुन के समक्ष प्रस्तुत किये हैं, उससे भारवि की राजनीतिक विचारधारा पूर्णतया प्रभावित है। भारवि ने जिस राजनैतिक शिष्टाचार का निर्वाह वनेचर द्वारा करवाया है, वह एक राजदरबार की सुव्यवस्था का परिचायक है।

संस्कृत साहित्य में कवियों को राजाश्रय में रहने तथा अपने वैदुष्य को अभिव्यक्त करने का पूर्णतः अवसर दिया जाता था। ये कवि राजाओं के आश्रय में रहकर राजनैतिक नियमों के बारे में यथावसर वार्तालाप करते थे, और उन्हें अपनी वाक्पटुता से प्रभावित करते थे। संस्कृत साहित्य में ऐसे अनेक कवियों के उद्धरण मिलते हैं, जो राजाओं को राजनीति में कुशल होने के मार्गों का अवलोकन कराते थे। इसके अतिरिक्त राजाओं की राजनीति में कुशलता

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

उनके गुप्तचरों पर निर्भर करती है। गुप्तचर ऐसे होने चाहिए, जो राजाओं को उचित –अनुचित का निःस्वार्थ भाव से बोध कराये और राजा को भी ऐसा होना चाहिए, जो गुप्तचरों द्वारा बतायी गयी बातों पर मंथन कर सही–गलत का निर्धारण करें।[1] इस महाकाव्य में वनेचर को यदि गुप्तचर की दृष्टि से देखा जाय तो किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संस्कृत साहित्य के राजनैतिक परिवेश में केवल पुरुषों का योगदान ही विचारणीय नहीं है, अपितु स्त्रियों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। संस्कृत वाङ्मय की सभी विधाओं में नारी चित्रण का उत्कर्ष अनेक रूपों में दिखायी देती है। भारतीय समाज और साहित्य दोनों ने ही स्त्रियों को अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया है। भारतीय समाज और साहित्य से स्त्रियों की महत्ता के विषय में विभिन्न कालों में अलग– अलग दशाओं का परिज्ञान होता है। उल्लेखनीय है कि स्त्रियों के राजनैतिक महत्त्व को जानने से पहले स्त्री पर विचार करना समीचीन होगा। नारी का विविध स्वरूप वैदिक वाङ्मय में दृष्टिगत होता है, जहाँ उसे धर्म और समाज का प्राण कहा गया है। सर्वप्रथम नारी का उच्च स्थान सैन्धव सभ्यता से प्राप्त होता है। हड़प्पा सभ्यता में स्त्रियों का उच्च स्थान होने के कारण उसे मातृसत्तात्मक सभ्यता का स्वरूप दे सकते हैं। मातृदेवी की उपासना का प्रचलन सर्वप्रथम सैन्धव सभ्यता में ही दृष्टिगोचर होता है। यद्यपि सैन्धव निवासियों की आस्था अनेक रूपों में थी, किन्तु प्रथम उपासना का रूप मातृदेवी थीं। मातृदेवी को उत्पत्ति का कारण बताते हुए सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है। अतः सैन्धव सभ्यता में नारी के उत्तम स्वरूप का प्रमाण मिलता है। भारतीय धर्म ग्रन्थ में स्त्रियों की महत्ता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं– यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते त़त्र देवताः।[2]

लौकिक संस्कृत साहित्य में नारी चित्रण का स्पष्ट स्वरूप रामायण काल से प्राप्त होता है, जहाँ नारी का राजनीति में सहभाग करने का आद्य स्वरूप परिलक्षित होता है, जिसमें कैकेयी, कौशल्या, मंथरा और शूर्पणखा आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। कैकेयी की राजनीति कुशलता राम को राज्य से च्युत् करने में दिखायी देती है।[3] साथ ही साथ शूर्पणखा की राजनीति अत्यन्त सराहनीय है, जो अपने राक्षस भाइयों को उपदेश देती है कि उसके राज्य में बाहरी तपस्वी बिना किसी अनुमति के निवास कर रहे हैं।[4] रामायण से पूर्व नारी का राजनीति में योगदान का स्वरूप अस्पष्ट अवस्था में है, फिर भी नारियों के वैदुष्य की सराहना के प्रमाण स्पष्ट हैं, जिसमें अपोला, मुद्रा और घोषा आदि विदुषी नारियों का नामोल्लेख मिलता है। नारी कुशलता की जो परम्परा वैदिक काल से प्राप्त होती है, उसका विस्तृत रूप महाभारत में प्रस्फुटित होता है। महाभारत की राजनीति में नारी के स्वतन्त्र स्वरूप तथा वैदुष्य का जो वर्णन मिलता है, उसमें द्रौपदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है । द्रौपदी के प्रत्येक कथन से राजनीत के प्रत्येक पक्ष पर गहरा प्रभाव दिखायी देता है, जो सफल एवं कुशल राजनैतिक नारी का बोध कराता है। किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में वनेचर द्वारा दुर्योधन के राजनीति सम्बन्धी समस्त क्रिया–कलापों की सूचना युधिष्ठिर को दे दी जाती है । युधिष्ठिर वनेचर द्वारा बतायी गयी सूचनाओं पर द्रौपदी के भवन में भाइयों से मन्त्रणा करते हैं– प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा, तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः।[5]

प्रथम सर्ग से ही द्रौपदी के कुशल राजनीतिज्ञा ,स्वाभिमानी क्षत्राणी, अपमान पीड़िता, क्रोधोद्दीपन में दक्ष जैसे विचारों से युक्त होने के प्रमाण मिलते हैं। द्रौपदी अपने विविध स्वरूप वाले विचारों से युधिष्ठिर को राजनीति परक उपदेश देती है। द्रौपदी, युधिष्ठिर के मुख से शत्रु की सफलता को सुनकर तथा अपने अपमान का स्मरण करके राज्य और सम्मान प्राप्त करने के लिए युधिष्ठिर के क्रोध को उद्दीप्त करने वाले राजनीतिक वचनों को कहती है। द्रौपदी युधिष्ठिर को तो नीतिनिपुण स्वीकार करती है, फिर भी स्त्री शालीनता को नष्ट करके उन्हें युद्ध के लिये प्रेरित करती है। निरस्तनारी समया दुराधयः,[6] और उनकी त्रुटियों की ओर संकेत करती हुई उनके पूर्वजों के पराक्रम का बोध कराती है कि कोई क्षत्रियाभिमानी राजा कुलवधू जैसी राजलक्ष्मी को शत्रुओं द्वारा अपहृत नहीं करायेगा। वह युधिष्ठिर को अपने अपमान तथा अपहृत राज्य के लिये धिक्कारती हुई कहती है – त्वयात्महस्तेन मही मदच्युता, मतंगजेन स्रगिवाऽपवर्जिता'।[7]

द्रौपदी, युधिष्ठिर को 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' का उपदेश देते हुए कहती है कि जो व्यक्ति कपटी है, उसके साथ कपटी व्यवहार के द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है। यदि दुष्ट के साथ सज्जनता का व्यवहार करते हैं तो पराजय होना सुनिश्चित है, क्योंकि दुष्ट लोग सज्जनता का व्यवहार करने वालों को मन्दबुद्धि समझकर उसके हृदय में प्रवेश कर उसी प्रकार नष्ट कर देते हैं जिस प्रकार तीव्र बाण कवच रहित प्राणी को मार डालते हैं। अतः धूर्त के साथ धूर्तता करना ही समुचित नीति है– व्रजन्ति ते मूढ़धियः पराभवं, भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।[8]

द्रौपदी युधिष्ठिर की राजनीति में निष्क्रियता और प्रमादता के विषय में कहती है कि समस्त परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने पर भी जिस प्रकार कोई श्रेष्ठ पुरुष अपनी अनुरागिणी, कुलीन मनोहारिणी भार्या को दूसरों से अपहृत नहीं करा सकता, उसी प्रकार समस्त राजवैभव के अनुकूल होने पर भी आपने कुलक्रमागत गुणानुरागिणी राजलक्ष्मी को दूसरों से अपहृत कराया है। इस संसार में युधिष्ठिर से निष्ठुर कोई नहीं होगा , जो अपनी राजलक्ष्मी का अपहरण कराकर स्वयं वीर पुरुषों से निन्दित होगा। द्रौपदी युधिष्ठिर को शमीवृक्ष में छिपी हुयी अग्नि की तरह क्रोध रूपी ज्वाला से शत्रु का विनाश करने के लिये साम, दाम दण्ड और भेद से तत्पर रहने का उपदेश देती है। द्रौपदी क्षत्रिय नारी होने के कारण युधिष्ठिर को शत्रु के प्रति क्षत्रिय धर्म का पालन करने के लिये कहती है। क्षत्रिय धर्मों का पालन न करने वाले राजा निकृष्ट और व्यभिचारी कहे गये हैं। यद्यपि युधिष्ठिर इन गुणों के विपरीत थे।

द्रौपदी युधिष्ठिर से राजनीति में क्रोध का महत्त्व बताते हुए कहती है कि एक सफल और कुशल राजनीतिज्ञ को उचित कारण पर क्रोध आना चाहिए। सभी प्राणी उसी राजा के वशीभूत होते हैं ,जो सफल क्रोध वाले तथा विपत्तियों का निराकरण करने वाले होते हैं। एक राजा कितना भी अधिक स्नेही हो, यदि उसे समुचित कारण होने पर भी क्रोध नहीं आता तो वह आत्मीयजनों से निरादर प्राप्त करता है और शत्रुजनों के भय का कारण भी नहीं बन पाता। क्रोधहीन राजा सफल शासक नहीं हो सकता। अतः द्रौपदी के कथनानुसार शत्रुविजयिनी शक्ति को प्रकट करने के लिये क्रोध का होना परमावश्यक है:–

अवन्ध्य कोपस्यविहन्तुरापदां, भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।

अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना, न जातहार्देन न विद्विषादरः।।[9]

द्रौपदी एक राजा की सफलता का कारण क्रोध को स्वीकार करती है। यहाँ क्रोध का राजनीति से घनिष्ठ सम्बन्ध बताया गया है। युधिष्ठिर के लिए उस क्रोध की आवश्यकता है, जो उन्हें सफल शासक बना सकती है। दुर्योधन के प्रति क्रोध प्रकट करने के लिए द्रौपदी युधिष्ठिर से उनके अनुजों की दुर्दशा का वर्णन करती है। जिसका मूल लक्ष्य युधिष्ठिर के क्रोध को जागृत करना और अनुजों की मनोदशा को अपने अनुकूल बनाना है। यहाँ एक स्त्री की राजनैतिक पटुता का प्रबल प्रमाण मिलता है जिसमें एक राजा को उसकी प्रजा के प्रति कर्तव्यबोध कराया गया है।[10]

द्रौपदी युधिष्ठिर के अनुजों की दुर्दशा व्यक्त करने के ckn]Lo;a युधिष्ठिर की दशा का वर्णन करते हुए कहती है कि एक वैभवशाली राजा की वन के दुःखों से जो अवस्था हुई है , वह यदि भाग्यवश हुई होती तो कोई दुःख नहीं होता, क्योंकि सुख और दुःख जीवन में आते रहते हैं –चक्रस्य पंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः,किन्तु यह वनवास की विपत्ति तो शत्रु प्रदत्त है। त्रैलोक्य विश्रुत स्वयं धर्मराज और महानबलशाली भीम, अर्जुन जैसे भाई होने पर भी इस प्रकार के वनवासी जीवन को देखते हुए मुझ द्रौपदी को अत्यधिक दुःख हो रहा है, फिर भी शत्रुओं द्वारा अप्रतिहत शौर्य सम्पत्ति वाले मनस्वी पुरुषों की पराजय भी हर्ष में परिणत होने के लिये होती है–पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।[11] यहाँ द्रौपदी एक राजा को स्वेच्छया विपत्ति के हवाले करने की ओर संकेत करती है। सभी विपत्तियों के बाद भी, जो राजा शान्ति धारण किये रहता है, निश्चय ही ऐसे लोगों की चित्तवृत्तियाँ विलक्षण होती है–विचित्ररूपाः खलुचित्तवृत्तयः।।[12]

द्रौपदी युधिष्ठिर को शान्ति त्याग तथा क्षात्र धर्म का स्मरण कराती हुई कहती है कि हे राजन् शान्ति छोड़कर शत्रुओं के वध के लिए पुनः क्षत्रिय तेज को धारण कीजिए। भार्या एवं भाइयों की दशा देखकर तपस्विजनोचित शान्ति को त्याग दें। शान्ति धारण करके काम, क्रोधादि छः शत्रुओं को दूर करके मुनिजन परमसिद्धि को प्राप्त करते हैं, परन्तु राजा तो शान्ति का परित्याग करके क्षात्रधर्म के अनुसार स्वाभिमान को प्राप्त करते हैं। अतः राजाओं की यह परम्परा नहीं है कि शत्रुभय से वन प्रदेश में छिपकर जीवन व्यतीत करें। शान्ति से सिद्धि तो मुनिलोग प्राप्त करते हैं, राजा लोग नहीं–शमेन सिद्धिं मुनयः न भूभृतः।[13] द्रौपदी राजनीति से मुनियों जैसी शान्ति की सराहना नहीं करती, क्योंकि शान्ति मुनियों का भूषण है और राजाओं का दूषण है।

द्रौपदी द्वारा युधिष्ठिर को शत्रु के प्रति राजनीति सम्बन्धी मनोव्यथाओं का स्मरण कराने के बाद भी जब क्रोध उद्दीप्त नहीं हुआ, तब वह उनके स्वाभिमान पर कुठाराघात करती हुई कहती है कि–निराश्रया हन्त हता मनस्विता।[14]अर्थात् संसार में देखा जाता है कि पशु–पक्षी भी शत्रु के पराक्रम को सहन नहीं करते है। तेजधारियों में अग्रगण्य यशोरूपी धन वाले यदि शत्रुकृत असहनीय तिरस्कार को सह रहे है तो निश्चय ही मनस्विता आश्रयहीन होने के कारण नष्ट हो जायेगी क्योंकि स्वाभिमानता तेजस्वियों का आश्रय लेकर रहती है, अन्यथा संसार के कोष से यह शब्द हमेंशा के लिए लुप्त हो जायेगा ।

वीर पुरुष को उसके शस्त्र की निन्दा करके प्रभावित किया जा सकता है। द्रौपदी युधिष्ठिर पर व्यंग्य करते हुए कहती है कि यदि चिरकाल तक सुख का साधन क्षमा ही है तो राजचिह्न त्यागकर ,जटाएँ धारण कर मुनिवेश में यज्ञादि क्रियाओं का अनुष्ठान करें–जटाधर : संजुहुधीह पावकम्।[15] शत्रुकृत अपमान से व्यथित द्रौपदी युधिष्ठिर को उनके कर्तव्य का स्मरण दिलाती है । वह कहती है कि कपटी शत्रु के साथ की गयी शर्त, सन्धि या प्रतिज्ञा पालन करना विवेकहीनता है। शत्रु दुर्योधन निरन्तर अनिष्ट और अपकार करता जा रहा है, अतः उसके साथ की गयी तेरह वर्ष के वनवास की सन्धि को तोड़ देना ही नीति है। अपकारी शत्रु कपटपूर्ण व्यवहार करके कोई सन्धि या प्रतिज्ञा करा लें तो उसका पालन करने का कोई औचित्य नहीं है। इसलिए युधिष्ठिर को तेरह वर्ष की प्रतीक्षा करने के स्थान पर उस कपटपूर्ण सन्धि को तोड़कर अपने राज्य को पुनःप्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए–अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः विदधति सोपधि सन्धि दूषणानि।[16]

द्रौपदी कहती है कि परिस्थितियों के अनुकूल कार्य करते हुए राजनीति में कूटनीति को सर्वोच्च स्थान देना ही क्षत्रिय का महान धर्म है । वह युद्ध के लिये युधिष्ठिर का उत्साहवर्धन करती हुई कहती है कि–जिस प्रकार सूर्य अन्धकार रूपी शत्रु को नष्ट करके पुनः कान्ति को धारण कर लेता है उसी प्रकार प्रताप एवं ऐश्वर्य से हीन अन्धकार सदृश शत्रु का नाश करके अभ्युदय के इच्छुक आपको राजलक्ष्मी अवश्य प्राप्त होगी। द्रौपदी युधिष्ठिर को शत्रु के प्रति सदैव कूटनीति का पालन करने के लिए सम्बोधित करती है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि द्रौपदी एक साधारण नारी होने के साथ–साथ नीति कुशल स्वाभिमानी क्षत्राणी है, जिसका भारतीय इतिहास की तेजस्वी नारियों में प्रमुख स्थान है । वह क्षमाशीलता को कायरता समझती है। द्रौपदी का शत्रु के प्रति युधिष्ठिर के सम्बोधन में जो तीक्ष्णता है, उसका कारण उसकी मनोदशा ही है। द्रौपदी का कथन व्यावहारिक एवं नीतिकुशल है, जो वर्तमान सन्दर्भ में एक समाज एवं राष्ट्र के वैभव में सहयोग प्रदान कर सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. किरात 0–1/2 –6	7.वही– 1/29	13. वही–1/42
2. मनु 0–3/56	8.वही–1/30	14. वही–1/43
3. वा0रा0–1/14/8,9	9.वही–1/33	15. वही–1/44
4. वही–3/33/9–11	10.वही–1/34–36	16. वही–1/45
5. किरात 0–1/26	11. वही –1/41	
6. वही–1 /28	12. वही–1/37	